Sawab Badhane Ke Nuskhe (Hindi)

सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े

(निय्यतों के 72 म-दनी गुलदस्ते)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

الحمد للہ رب العلمین والصلوۃ والسلام علی سید المرسلین
اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم بسم اللہ الرحمن الرحیم

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये ان شاء اللہ عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اللھم افتح علینا حکمتک وانشر
علینا رحمتک یا ذا الجلال والاکرام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عزوجل ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المستطرف ج۱ص۴۰دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े

येह रिसाला (**सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े

हो सके तो येह रिसाला हर वक़्त साथ रखिये और ज़रूरतन इस में से देख कर निय्यतें कर लीजिये ।

क़ियामत की दहशतों से नजात पाने का नुस्ख़ा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत **दुरूद शरीफ़** पढ़े होंगे । (اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج٥ ص٢٧٧ حديث ٨١٧٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

निय्यत की फ़ज़ीलत पर तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

❁ मुसल्मान की **निय्यत** उस के अ़मल से बेहतर है ।

(مُعجَم كبير ج٦ ص١٨٥ حديث ٥٩٤٢)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

अच्छी निय्यत बन्दे को **जन्नत** में दाख़िल करेगी।

(اَلْفِردَوس ج٤ص٣٠٥ حدیث٦٨٩٥)

जिस ने **नेकी का इरादा** किया फिर उसे न किया तो उस के लिये एक **नेकी** लिखी जाएगी। (مُسلِم ص٧٩ حدیث ١٣٠)

अच्छी अच्छी निय्यतों का, हो ख़ुदा जज़्बा अ़ता

बन्दए मुख़्लिस बना, कर अ़फ़्व मेरी हर ख़त़ा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی محمَّد

ब वक़्ते वफ़ात अच्छी अच्छी निय्यतें (ह़िकायत)

किसी बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी ह़यात के आख़िरी लम्ह़ात में ह़ाज़िरीन से फ़रमाया : मेरे साथ मिल कर **ह़ज** की निय्यत करो, **जिहाद** की निय्यत करो और इस त़रह़ एक एक कर के मुख़्तलिफ़ नेकियों के नाम गिनवाने लगे। अ़र्ज़ की गई : हुज़ूर ! इस ह़ालत में **निय्यतें** ? फ़रमाया : "अगर हम ज़िन्दा रहे तो इन निय्यतों पर अ़मल करेंगे और फ़ौत हो गए तो **निय्यतों का सवाब** तो मिल ही जाएगा।"

(اَلمَدْخَل لابن الحَاجّ ،ج١ص٤٦ مُلَخَّصاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی محمَّد

आ़लिमे निय्यत आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ का इर्शादे बा ब-र-कत

"जब काम कुछ बढ़ता नहीं, सिर्फ़ **निय्यत** कर लेने में एक नेक काम के दस हो जाते हैं तो एक ही निय्यत करना कैसी ह़माक़त और बिला वज्ह अपना नुक़्सान है।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 157)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی محمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

निय्यत के बारे में पांच अहम म-दनी फूल

﴾1﴿ बिगै़र अच्छी **निय्यत** के किसी भी नेक काम का सवाब नहीं मिलता ﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ﴾3﴿ **निय्यत** दिल के इरादे को कहते हैं, दिल में निय्यत होते हुए ज़बान से भी दोहरा लेना ज़ियादा अच्छा है, दिल में **निय्यत** मौजूद न होने की सूरत में सिर्फ़ ज़बान से **निय्यत** के अल्फ़ाज़ अदा कर लेने से **निय्यत** नहीं होगी ﴾4﴿ किसी भी अ़-मले ख़ैर में अच्छी निय्यत का मत़लब येह है कि जो अ़मल किया जा रहा है दिल उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो और वोह अ़मल रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये किया जा रहा हो, इस निय्यत से इ़बादात को एक दूसरे से अलग करना या इ़बादत और आ़दत में फ़र्क़ करना मक़्सूद होता है । याद रहे ! सिर्फ़ ज़बानी कलाम या सोच या बे तवज्जोही से इरादा करना इन सब से निय्यत कोसों दूर है क्यूं कि निय्यत इस बात का नाम है कि दिल उस काम को करने के लिये बिल्कुल तय्यार हो या'नी **अ़ज़्मे मुसम्मम** और पक्का इरादा हो ﴾5﴿ जो अच्छी निय्यतों का आ़दी नहीं उसे शुरूअ़ में ब तकल्लुफ़ इस की आ़दत बनानी पड़ेगी, मत़्लूबा नेक काम शुरूअ़ करने से क़ब्ल कुछ रुक कर मौक़अ़ की मुना-सबत से सर झुकाए, आंखें बन्द किये जे़ह्न को मुख़्तलिफ़ ख़यालात से ख़ाली कर के **निय्यतों** के लिये यक्सू हो जाना मुफ़ीद है, इधर उधर नज़रें घुमाते, बदन सहलाते खुजाते, कोई चीज़ रखते उठाते या जल्द बाज़ी के साथ निय्यतें करना चाहेंगे तो शायद नहीं हो पाएंगी । निय्यतों की आ़दत बनाने के लिये इन की अहम्मिय्यत पर नज़र रखते हुए आप को सन्जी-दगी के साथ पहले अपना जे़ह्न बनाना पड़ेगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नियतों के 72 म-दनी गुलदस्ते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! पेश कर्दा **निय्यतों के म-दनी गुलदस्तों** में से ह़स्बे ह़ाल या'नी अपनी उस वक़्त की क़ल्बी कैफ़िय्यत और मौक़अ़ की मुना-सबत से निय्यतें करनी हैं, गुलदस्तों में निय्यतें बहुत कम लिखी गई हैं ताहम इ़ल्मे निय्यत रखने वाला इन में इज़ाफ़ा कर सकता है।

ख़ुसूसी निय्यत

मौक़अ़ की मुना-सबत से पेश कर्दा तक़रीबन हर म-दनी गुलदस्ते के साथ की जाने वाली निय्यत : بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ूंगा।

﴾1﴿ सुब्ह़ सवेरे येह निय्यत कर लीजिये

आज का दिन आंख, कान, ज़बान और हर उ़ज़्व (या'नी जिस्म के हर ह़िस्से) को गुनाहों और फ़ुज़ूलिय्यात से बचाते हुए नेकियों में गुज़ारूंगा, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾2﴿ जूते पहनने की निय्यतें

۞ इत्तिबाए़ सुन्नत में जूते पहनूंगा ۞ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ कर जूते झाड़ लूंगा (ताकि कोई कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए) ۞ सीधे जूते से पहल करने की सुन्नत अदा करूंगा ۞ सफ़ाई की सुन्नत अदा करते हुए पाउं को गन्दगी और मैल कुचैल से जूतों के ज़रीए़ बचाऊंगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾3﴿ जूते उतारने की निय्यतें

۞ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ कर पहले उलटा जूता ऊतारूंगा फिर सीधा ۞ अगर मस्जिद में ले जाना हुवा तो दोनों जूतों के तल्वे आपस में रगड़ कर गर्द वग़ैरा बाहर ही गिरा दूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ बैतुल ख़ला जाने की निय्यतें

۞ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ कर सर ढांप कर अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ मस्नून दुआ[1] पढ़ कर दाख़िल होने में इत्तिबाए सुन्नत में उलटे पाउं से पहल करूंगा ۞ सत्र खुला होने की सूरत में क़िब्ले की त़रफ़ मुंह और पीठ करने से बचूंगा ۞ निकलते वक़्त इत्तिबाए सुन्नत में पहले सीधा पाउं बाहर रखूंगा ۞ बाहर निकल आने के बा'द अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ मस्नून दुआ[2] पढूंगा ۞ अ़वामी या मस्जिद के इस्तिन्जा ख़ाने पर अगर क़ितार हुई तो सब्र के साथ अपनी बारी का इन्तिज़ार करूंगा ۞ अगर किसी को ज़ियादा ह़ाजत हुई और

مدینہ

1 : बैतुल ख़ला में जाने की दुआ : بِسْمِ اللهِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ तरजमा : **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़, **या अल्लाह**! मैं नापाक जिन्नों (नर व मादा) से तेरी पनाह मांगता हूं। (کتاب الدعاء للطبرانی ص ۱۳۲ حدیث ۳۵۷) 2 : बैतुल ख़ला से बाहर निकलने की दुआ : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ तरजमा : **अल्लाह** तआ़ला के लिये सब ख़ूबियां हैं जिस ने मुझ से तक्लीफ़ देह चीज़ को दूर किया और मुझे आ़फ़िय्यत (राह़त) बख़्शी। (ابن ماجہ ج۱ ص۱۹۳ حدیث ۳۰۱) बेहतर येह है कि साथ में येह दुआ भी मिला लीजिये इस त़रह़ दो ह़दीसों पर अ़मल हो जाएगा, चुनान्चे चाहें तो बड़ी दुआ से क़ब्ल ही येह कह लीजिये : غُفْرَانَكَ तरजमा : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़िफ़रत का सुवाल करता हूं। (ترمذی ج۱ ص۸۷ حدیث ۷)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

मुझे सख़्त मजबूरी या नमाज़ फ़ौत होने का अन्देशा न हुवा तो ईसार करूंगा ❁ बार बार दरवाज़ा बजा कर अन्दर वाले को ईज़ा नहीं दूंगा ❁ अगर किसी ने बार बार मेरा दरवाज़ा बजाया तो सब्र करूंगा ❁ दरो दीवार पर कुछ नहीं लिखूंगा न वहां लिखा हुवा पढ़ूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿ वुज़ू की निय्यतें

❁ हुक्मे इलाही बजा लाते हुए वुज़ू करता हूं[1] ❁ بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰه कहूंगा ❁ इत्तिबाए़ सुन्नत में मिस्वाक करूंगा और इस के ज़रीए़ ज़िक्रो दुरूद के लिये मुंह की पाकीज़गी ह़ासिल करूंगा ❁ मक्रूहात और ❁ पानी के इसराफ़ से बचूंगा ❁ फ़राइज़, सुनन और मुस्तह़ब्बात का ख़याल रखूंगा ❁ हर उ़ज़्व धोने के दौरान दुरूद शरीफ़ पढ़ूंगा ❁ फ़ारिग़ हो कर येह दुआ़[2] पढ़ूंगा ❁ आस्मान की त़रफ़ देख कर कलिमए शहादत और **सू-रतुल क़द्र** पढ़ूंगा ❁ आख़िर में बात़िनी वुज़ू के लिये गुनाहों से तौबा करूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾6﴿ मस्जिद में जाने की निय्यतें

❁ नमाज़ के लिये जाता हूं ❁ मुअज़्ज़िन की दा'वत (या'नी

مدینہ

1 : अह़नाफ़ के नज़्दीक बिग़ैर निय्यत भी वुज़ू हो जाएगा मगर सवाब नहीं मिलेगा।

2 : दुआ़ येह है : اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे कसरत से तौबा करने वालों में बना दे और मुझे पाकीज़ा लोगों में शामिल कर दे। (ترمذی ج۱ ص۱۲۱ حدیث ۵۵)

नमाज़ के लिये बुलाना) क़बूल करता हूं ۞ जो मुसल्मान रास्ते में मिला उसे सलाम करूंगा ۞ सलाम करने वाले को जवाब दूंगा ۞ बन पड़ा तो कम अज़ कम एक मुसल्मान को रग़बत दिला कर नमाज़ के लिये साथ लेता जाऊंगा ۞ मस्जिद की ज़ियारत करूंगा ۞ मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त सीधे और बाहर निकलते वक़्त उलटे पाउं से पहल कर के इत्तिबाए़ सुन्नत करूंगा ۞ दाख़िल होने और बाहर निकलने की मस्नून दुआ़एं[1] (अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ) पढ़ूंगा ۞ ए'तिकाफ़ करूंगा (इस ए'तिकाफ़ के लिये रोज़ा शर्त़ नहीं और येह एक लम्ह़े का भी हो सकता है) ۞ मुसल्मानों से सलाम व मुसा-फ़ह़ा करूंगा ۞ اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना) करूंगा ۞ नमाज़े बा जमाअ़त में मुसल्मानों के क़ुर्ब की ब-र-कतें ह़ासिल करूंगा।

﴾7﴿ दुआ़ मांगने की निय्यतें

۞ **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त की इत़ाअ़त करते हुए इ़बादत समझ कर इत्तिबाए़ सुन्नत में दुआ़ मांगूंगा ۞ शुरूअ़ में ह़म्दो सलात और आख़िर में दुरूद शरीफ़ पढ़ूंगा।

﴾8﴿ मुअज़्ज़िन के लिये निय्यतें

۞ रिज़ाए इलाही के लिये अज़ान दूंगा पहले بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم फिर दुरूदो सलाम पढ़ कर येह ए'लान करूंगा : "गुफ़्त-गू और कामकाज

---

1 : मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ़ : اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू अपनी रह़मत के दरवाज़े मेरे लिये खोल दे। मस्जिद से निकलने की दुआ़ : اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तुझ से तेरे फ़ज़्ल का सुवाल करता हूं। (مسلم ص۳۵۹ حدیث۷۱۳)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (جمع الجوامع)

रोक कर अज़ान का जवाब दीजिये और ढेरों नेकियां कमाइये" ۞ अज़ान देने की सुन्नतों और आदाब का ख़याल रखूंगा ۞ अव्वल आख़िर दुरूदो सलाम के साथ अज़ान के बा'द की दुआ़ पढ़ूंगा ۞ इक़ामत से क़ब्ल दुरूदो सलाम पढ़ कर येह ए'लान करूंगा : ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लीजिये और मोबाइल फ़ोन हो तो बन्द कर दीजिये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾9﴿ इमाम के लिये निय्यतें

۞ रिज़ाए इलाही के लिये नमाज़ पढ़ाऊंगा ۞ इत्तिबाए़ सुन्नत में सफ़ें दुरुस्त करवाऊंगा[1] ۞ मुक़्तदियों और अहले मह़ल्ला के सुख दुख में ह़िस्सा लूंगा, मगर इन से आ़मियाना अन्दाज़ में बे तकल्लुफ़ (FREE) नहीं बनूंगा (अगर ग़ैर सन्जी-दगी आई तो समझो वक़ार रुख़्सत हुवा) इन को नेकी की दा'वत पेश करूंगा ۞ यक़ीनी मा'लूमात होने की सूरत ही में मस्अले का जवाब दूंगा वरना मा'ज़िरत कर लूंगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

1 : हो सके तो ह़स्बे मौक़अ़ इस त़रह़ ए'लान कीजिये : अपनी एड़ियां, गरदनें और कन्धे एक सीध में कर के सफ़ सीधी कर लीजिये, (अपनी एड़ियां फ़र्श पर बनी हुई पट्टी के अगले सिरे पर इस एह़तियात़ से रखिये कि एड़ी का कोई ह़िस्सा पट्टी के ऊपर न रहे न ज़ियादा आगे रहे । जहां सिर्फ़ लकीर लगी हो वहां यूं ए'लान किया जाए : लकीर के अगले सिरे पर इस एह़तियात़ से खड़े हों कि एड़ी का कोई ह़िस्सा लकीर के ऊपर न रहे ।) दो आदमियों के बीच में जगह छोड़ना गुनाह है, कन्धे से कन्धा ख़ूब अच्छी त़रह़ मिला कर रखना वाजिब, सफ़ सीधी रखना वाजिब और जब तक अगली सफ़ (दोनों कोनों तक) पूरी न हो जाए जानबूझ कर पीछे नमाज़ शुरूअ़ कर देना तर्के वाजिब, ना जाइज़ और गुनाह है । 15 साल से छोटे ना बालिग़ बच्चों को सफ़ों में खड़ा न रखिये, इन्हें कोने में भी न भेजिये छोटे बच्चों की सफ़ सब से आख़िर में बनाइये ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

﴾10﴿ खुत्बे की निय्यतें

۞ रिज़ाए इलाही के लिये मेह़राब की बाईं जानिब मिम्बर पर बैठ कर अज़ाने खुत़्बा का जवाब देने के बा'द खड़े हो कर, क़िब्ले को पीठ किये आहिस्ता से اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم पढ़ कर अ़-रबी ज़बान में जुमुआ़ का खुत़्बा दूंगा ۞ दोनों खुत़्बों के दरमियान मिम्बर पर बैठने की सुन्नत अदा करूंगा, इस दौरान दुआ़ मांगूंगा (कि क़बूलिय्यत की घड़ी है) ۞ दूसरे खुत़्बे में इत्तिबाए़ सुन्नत में पहले खुत़्बे की निस्बत आवाज़ धीमी रखूंगा।

﴾11﴿ पानी पीने की निय्यतें

۞ इ़बादत पर क़ुव्वत और ह़स्बे ज़रूरत कस्बे ह़लाल के लिये भागदौड़ के लिये त़ाक़त ह़ासिल करूंगा ۞ गिलास भरने और पीने के दौरान एक क़त़रा भी ज़ाएअ़ नहीं होने दूंगा ۞ बैठ कर, بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ कर, उजाले में देख कर, सीधे हाथ से, चूस चूस कर, तीन सांस में पियूंगा ۞ पी चुकने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहूंगा ۞ गिलास में बचे हुए पानी का एक क़त़रा भी नहीं फेंकूंगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾12﴿ खाने की निय्यतें

۞ खाने से पहले और बा'द में खाने का वुज़ू करूंगा (या'नी दोनों हाथ पहुंचों तक धोऊंगा) ۞ खाने के ज़रीए़ इ़बादत और ह़स्बे ज़रूरत कस्बे ह़लाल के लिये भागदौड़ पर क़ुव्वत ह़ासिल करूंगा[1]

1 : भूक से कम खाना मुनासिब है, जितनी भूक हो उतना ही खाने से भी इ़बादत पर क़ुव्वत मिल सकती है। अलबत्ता ख़ूब डट कर खाने से उलटा इ़बादत में सुस्ती पैदा होती, गुनाहों की त़रफ़ रुज्हान बढ़ता और पेट की ख़राबियां जनम लेती हैं। مدینہ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلی)

۞ इत्तिबाए़ सुन्नत में ज़मीन पर बिछे हुए दस्तर ख़्वान पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ बैठ कर بِسْمِ اللّٰه और दीगर दुआ़एं पढ़ कर तीन उंग्लियों से छोटा निवाला ले कर अच्छी त़रह़ चबा कर खाऊंगा ۞ खाने के दौरान हर लुक़्मे पर يَا وَاجِدُ और بِسْمِ اللّٰه नीज़ हर लुक़्मा खा लेने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहूंगा ۞ गिरे हुए दाने वग़ैरा दस्तर ख़्वान से उठा कर खा लूंगा ۞ आख़िर में अदाए सुन्नत की निय्यत से बरतन और तीन तीन बार उंग्लियां चाटूंगा। (अगर खाने का असर बाक़ी रह जाए तो तीन बार के बा'द भी चाटते रहिये यहां तक कि ग़िज़ा का असर जाता रहे)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾13﴿ मिल कर खाने की मज़ीद निय्यतें

۞ मौक़अ़ मिला तो खाने से क़ब्ल और बा'द की दुआ़एं पढ़ाऊंगा ۞ दस्तर ख़्वान पर अगर कोई आ़लिम या बुज़ुर्ग मौजूद हुए तो उन से पहले खाना शुरूअ़ नहीं करूंगा ۞ ग़िज़ा का उ़म्दा ह़िस्सा म-सलन बोटी वग़ैरा ह़िर्स से बचते हुए दूसरों की ख़ात़िर ईसार करूंगा ۞ खाने के हर लुक़्मे पर हो सका तो इस निय्यत के साथ बुलन्द आवाज़ से يَا وَاجِدُ कहूंगा कि दूसरों को भी याद आ जाए और अत़राफ़ की अश्या गवाह हों ۞ जब तक दस्तर ख़्वान न उठा लिया जाए उस वक़्त तक नहीं उठूंगा ۞ जब तक सब फ़ारिग़ न हो जाएं हाथ नहीं रोकूंगा, अगर रोकना हुवा तो हुक्मे ह़दीसे पाक पर अ़मल करते हुए मा'ज़िरत पेश करूंगा।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 : इसी ह़दीस की बिना पर उ़-लमा येह फ़रमाते हैं कि अगर कोई शख़्स कम ख़ूराक हो तो आहिस्ता आहिस्ता थोड़ा थोड़ा खाए और इस के बा वुजूद भी अगर जमाअ़त का साथ न दे सके तो मा'ज़िरत पेश करे ताकि दूसरों को शरमिन्दगी न हो। (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 367)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

﴾14﴿ ख़िलाल की निय्यतें

खाने के बा'द ख़िलाल करते वक़्त निय्यत कीजिये : ۞ लकड़ी के तिन्के से ख़िलाल की सुन्नत अदा कर रहा हूं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾15﴿ मेहमान नवाज़ी की निय्यतें

۞ रिज़ाए इलाही के लिये मेहमान नवाज़ी करते हुए पुर तपाक मुलाक़ात के साथ साथ ख़ुशदिली से खाना या चाय वग़ैरा पेश करूंगा ۞ मेहमान से ख़िदमत नहीं लूंगा ۞ इत्तिबाए सुन्नत में **मेहमान** को दरवाज़े तक रुख़्सत करने जाऊंगा।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾16﴿ दा'वते तआम पर जाने की निय्यतें

۞ दा'वत में जाने के शर-ई अह्कामात पेशे नज़र रखूंगा[2] ۞ खाने में ह़िर्स भरा अन्दाज़ नहीं अपनाऊंगा ۞ खाने और दीगर मुबाह़ मुआ-मलात में ऐब नहीं निकालूंगा ۞ अगर अपने पास खाना ख़त्म हो गया तो मांगने के बजाए सब्र करते हुए इन्तिज़ार कर लूंगा।

مدينه

1 : मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : हमारा मेहमान वोह है जो हम से मुलाक़ात के लिये बाहर से आए ख़्वाह उस से हमारी वाक़िफ़िय्यत पहले से हो या न हो। जो हमारे लिये अपने ही मह़ल्ले या अपने शह्र में से हम से मिलने आए दो चार मिनट के लिये वोह मुलाक़ाती है मेहमान नहीं। उस की ख़ातिर तो करो मगर उस की दा'वत नहीं है और जो ना वाक़िफ़ शख़्स अपने काम के लिये हमारे पास आए वोह मेहमान नहीं जैसे ह़ाकिम या मुफ़्ती के पास मुक़द्दमे वाले या फ़तवा (लेने) वाले आते हैं येह ह़ाकिम (या मुफ़्ती) के मेहमान नहीं। (मिरआत, जि. 6, स. 54) 2 : म-सलन : जहां मर्द व औरत का बे पर्दा इज्तिमाअ़ हो या गाने बाजे चलाए जाएं ऐसी दा'वत में नहीं जाऊंगा।

《17》 चाय/ दूध पीने की निय्यतें

۞ इबादत, तिलावत, दीनी किताबत (या'नी लिखने) और इस्लामी मुता-लए पर कुव्वत ह़ासिल करने के लिये بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ कर चाय (या दूध) पियूंगा ۞ पीने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहूंगा ۞ दूध पीने वाले येह भी निय्यत करें : अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ दूध पीने के बा'द की मस्नून दुआ[1] पढ़ूंगा ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

《18》 लिबास पहनने/ उतारने की निय्यतें

۞ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ कर कुरता पहनूं और उतारूंगा ۞ पहनने में सीधी आस्तीन से और उतारने में उलटी से पहल करते हुए इत्तिबाए सुन्नत करूंगा ۞ पाजामा उतारने से क़ब्ल بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ूंगा और बैठ कर पहनूंगा ۞ पाजामा पहनने में सीधे और उतारने में उलटे पाउं से पहल करूंगा ۞ पाइंचे टख़्नों से ऊपर रखूंगा ۞ लिबास पहनने के बा'द अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ मस्नून दुआ[2] पढ़ूंगा ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

مدینہ

1 : दूध पीने की दुआ येह है : اَللّٰھُمَّ بَارِکْ لَنَا فِیْہِ وَزِدْنَا مِنْہُ तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे लिये इस में ब-र-कत अ़ता फ़रमा और हमें मज़ीद अ़ता फ़रमा । (ترمذی ج۵ص۲۸۳حدیث۳۴۶۶)

2 : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शख़्स कपड़ा पहने और येह पढ़े : اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ کَسَانِیْ ھٰذَا وَرَزَقَنِیْہِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّۃٍ "तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** के लिये जिस ने मुझे येह कपड़ा पहनाया और मेरी त़ाक़त व कुव्वत के बिग़ैर मुझे अ़ता किया" तो उस के अगले पिछले गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे । (شُعَبُ الْاِیمان ج۵ ص۱۸۱ حدیث ۶۲۸۵)

﴾19﴿ तेल डालने / कंघी करने की निय्यतें

۞ **बालों** का इक्राम करने की निय्यत से इत्तिबाए़ सुन्नत में तेल लगाऊंगा ۞ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم पढ़ कर सुन्नत के मुत़ाबिक़ सर (और दाढ़ी) में तेल लगाऊंगा[2] ۞ तेल के ज़रीए़ अपने सर को ख़ुश्की से बचाऊंगा ۞ इस के ज़रीए़ पहुंचने वाली दिमाग़ को फ़रह़त और ह़ाफ़िज़े की क़ुव्वत से अह़कामे शरीअ़त सीखने में मदद ह़ासिल करूंगा ۞ सर और दाढ़ी के उलझे हुए बालों को हुक्मे ह़दीस पर अ़मल करते हुए بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم पढ़ कर संवारूंगा ۞ अदाए सुन्नत के लिये बीच सर में मांग निकालूंगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾20﴿ इमामा शरीफ़ बांधने की निय्यतें

۞ क़िब्ला रू खड़े हो कर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم पढ़ कर ब निय्यते सुन्नत, सफ़ेद कपड़े की सर से चिपकी हुई टोपी[1] पर इमामा शरीफ़ बांधूंगा ۞ सुन्नत के मुत़ाबिक़ शम्ला छोड़ूंगा ۞ इमामा शरीफ़ और टोपी वग़ैरा को तेल से बचाने के लिये ज़रूरतन सरबन्द की सुन्नत अपनाऊंगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 : सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब तेल इस्ति'माल फ़रमाते तो पहले अपनी उलटी हथेली पर तेल डाल लेते थे, फिर पहले दोनों अब्रूओं पर फिर दोनों आंखों पर और फिर सरे मुबारक पर लगाते थे। (جامع صغیر ص۴۰۷ حدیث ۶۵۴۳) सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब दाढ़ी मुबारक को तेल लगाते तो "**अ़न्फ़क़ा**" (या'नी निचले होंट और ठोड़ी के दरमियानी बालों) से इब्तिदा फ़रमाते थे। (مُعْجَم اَوْسَط ج۵ ص۳۶۶ حدیث ۷۶۲۹) 2 : नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इमामे के नीचे सरे अन्वर से चिपकी हुई सफ़ेद टोपी पहना करते। (مدارِجُ النّبوۃ ج۱ ص۴۷۱ مُلَخَّصاً)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

﴾21﴿ ख़ुश्बू लगाने की निय्यतें

❁ **अल्लाह** व **रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को ख़ुश्बू पसन्द है इस लिये लगाऊंगा[1] ❁ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم पढ़ कर, ब निय्यते सुन्नत ख़ुश्बू लगाऊंगा ❁ ख़ुश्बू आने पर दुरूद शरीफ़ पढूंगा ❁ अदाए शुक्रे ने'मत की निय्यत से اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡن कहूंगा ❁ मलाएका और मुसल्मानों को फ़रह़त पहुंचाऊंगा ❁ उ़म्दा ख़ुश्बू से ह़ाफ़िज़ा मज़्बूत़ होने की सूरत में दीनी अह़काम समझने पर क़ुव्वत ह़ासिल करूंगा। (ज़रूरतन ता'ज़ीमे मस्जिद, नमाज़ के लिये ज़ीनत, इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त के एह़तिराम वग़ैरा की भी निय्यत की जा सकती है)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ख़ुश्बू लगाने की ग़लत़ निय्यतों की निशान देही

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुश्बू लगाने में अक्सर शैत़ान ग़लत़ निय्यत में मुब्तला कर देता है। लिहाज़ा इ़त्र लगाने में अच्छी निय्यतों का ख़ुसूसी एहतिमाम होना चाहिये। चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ामिद इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی का फ़रमाने आ़ली है : इस निय्यत से ख़ुश्बू लगाना कि लोग वाह वाह करें या क़ीमती ख़ुश्बू लगा कर लोगों पर

مدینہ

1 : **अल्लाह** त़य्यिब है और "त़ीब" या'नी ख़ुश्बू को दोस्त रखता है, सुथरा है सुथराई (सफ़ाई) को दोस्त रखता है। (ترمذی ج٤ ص٣٦٥ حدیث٢٨٠٨) हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुश्बू (जो लगाई जाती है) और अच्छी बू (जो सूंघी जाती है) पसन्द फ़रमाते थे ख़ुद इस्ति'माल फ़रमाते और ख़ुश्बू के इस्ति'माल की तरग़ीब दिलाते। (وسائل الوصول الی شمائل رسول ص٨٨)

अपनी मालदारी का सिक्का बिठाने की निय्यत हो तो इन सूरतों में ख़ुश्बू लगाने वाला गुनहगार होगा और ख़ुश्बू बरोज़े क़ियामत मुर्दार से भी ज़ियादा बदबूदार होगी । (اِحیاءُ العلوم ج٥ ص٩٨)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾22﴿ घर से निकलते वक़्त की निय्यतें

۞ निकलते वक़्त घर वालों को सलाम करूंगा ۞ अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ मस्नून दुआ़[1] पढूंगा ۞ रास्ते में, कारोबार या मुला-ज़मत की जगह पर मुसल्मानों को सलाम करूंगा ۞ सलाम करने वालों को जवाब दूंगा ۞ जिन से गुनाह हो सकते हैं उन सातों आ'ज़ा या'नी आंख, ज़बान, कान, हाथ, पाउं, पेट और शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करूंगा[2] ۞ नमाज़े बा जमाअ़त की पाबन्दी करूंगा ۞ ह़स्बे मौक़अ़ इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों की दा'वत दूंगा ۞ वापसी पर घर में दाख़िल हो कर मस्नून दुआ़[3] पढ़ने के बा'द घर वालों को सलाम फिर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को

مدینہ

1 : वोह दुआ़ येह है : بِسْمِ اللّٰہِ تَوَکَّلْتُ عَلَی اللّٰہِ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया, बुराई से बचने और नेकी करने की कुव्वत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है" येह दुआ़ पढ़ने की ब-र-कत से सीधी राह पर रहेंगे, आफ़तों से ह़िफ़ाज़त होगी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद शामिले ह़ाल रहेगी । (ابوداوٗد، ج ٤ ص٤٢٠ حدیث٥٠٩٥ مُلخصاً) 2 : (انظر احیاء علوم الدین ج٥ ص١٢٦) 3 : घर में दाख़िल हो कर पढ़ने की दुआ़ :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَسْاَلُکَ خَیْرَ الْمَوْلَجِ وَ خَیْرَ الْمَخْرَجِ ط بِسْمِ اللّٰہِ وَلَجْنَا وَ بِسْمِ اللّٰہِ خَرَجْنَا ط وَ عَلَی اللّٰہِ رَبِّنَا تَوَکَّلْنَا

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से दाख़िल होने की और निकलने की भलाई मांगता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से हम (घर में) दाख़िल हुए और उसी के नाम से बाहर आए और अपने रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर हम ने भरोसा किया । (ابوداوٗد ج٤ ص٤٢١ حدیث٥٠٩٦)

सलाम अ़र्ज़ करने के बा'द **सू-रतुल इख़्लास** पढ़ूंगा।[1]

《23》 राह चलने / सीढ़ी चढ़ने उतरने की निय्यतें

۞ जहां जहां बन पड़ा निगाहें झुका कर चलूंगा ۞ औरतों और बे पर्दगी वाले इश्तिहारी बोर्ड्ज़ को देखने से बचूंगा ۞ मस्जिद देख कर दुरूद शरीफ़ और बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त बाज़ार की दुआ़[2] पढ़ूंगा ۞ राह में जो लिखा हुवा मुक़द्दस काग़ज़ पाऊंगा, उठा कर अदब की जगह रख दूंगा ۞ अहले इस्लाम को सलाम और मुसा-फ़ह़ा करूंगा ۞ मुसल्मानों के सलाम का जवाब दूंगा ۞ जो रिश्तेदार मिलेंगे उन से ब कुशादा पेशानी मिल कर सिलए रेह़्मी करूंगा[3] ۞ रास्ते में आने वाली ऊंचाई पर या सीढ़ी चढ़ते वक़्त "اَللّٰہُ اَکْبَر،اَللّٰہُ اَکْبَر" और ढलान या सीढ़ी से नीचे उतरते वक़्त "سُبْحٰنَ اللہ سُبْحٰنَ اللہ" पढ़ूंगा ۞ राह चलते या सीढ़ी चढ़ते उतरते हुए जूतों की आवाज़ न पैदा हो इस का ख़याल रखूंगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 : इस त़रह़ करने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ रोज़ी में ब-र-कत, और घरेलू झगड़ों से बचत होगी।

2 : सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त येह दुआ़ पढ़ ले :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

"**अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। उसी के लिये बादशाही है और उसी के लिये हर ता'रीफ़, वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ज़िन्दा है उसे कभी मौत नहीं आएगी। उस के हाथ में भलाई है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक लाख नेकियां लिखेगा, एक लाख गुनाह मिटा देगा, एक लाख द-रजे बुलन्द फ़रमाएगा और उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा। (ترمذی ج۵ص۲۷۰ حدیث ۳۴۳۹، ۳۴۴۰)

3 : रिश्तेदारों से अच्छी त़रह़ मिलना भी सिलए रेह़्म में दाख़िल है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

﴾24﴿ बैठने की निय्यतें

۞ (मौक़अ़ मिला तो) ब निय्यते अदाए सुन्नत क़िब्ला रुख़ बैठूंगा ۞ ग़ैर मोह़तात़ अन्दाज़ में घुटने खड़े कर के दूसरों के लिये बद निगाही का सामान नहीं करूंगा बल्कि पर्दे में पर्दा कर के बैठूंगा ۞ किसी के घुटने या रान पर अपना घुटना नहीं रखूंगा ۞ इ़ल्मे दीन की मजलिस, इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त और उ़-लमाए दीन की बारगाहों में बन पड़ा तो अ-दबन दो[2] ज़ानू बैठूंगा।

﴾25﴿ मां बाप की ख़िदमत और अपने बच्चों को प्यार करने की निय्यतें

۞ **अल्लाह** व **रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के हुक्म की बजा आ-वरी के लिये सिलए रेह़्मी और इत़ाअ़त कर के इन का दिल ख़ुश करूंगा ۞ इन की ख़िदमत कर के इन के एह़सानात का अ़-मली शुक्र अदा करूंगा ۞ अपनी हर हर दुआ़ में मां बाप को याद रखूंगा ۞ सिलए रेह़्मी करते हुए बच्चों का दिल ख़ुश करने के लिये ब निय्यते सुन्नत इन से प्यार करूंगा। (बहुत छोटे बच्चों को ब निय्यते सुन्नत ज़बान दिखा कर भी प्यार किया जा सकता है)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾26﴿ औलाद मिलने की निय्यतें

۞ औलाद मिले ताकि प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत में इज़ाफ़ा हो ۞ औलाद मिली तो सुन्नत के मुत़ाबिक़ तरबिय्यत

करूंगा हो सका तो आ़लिमे दीन बनाऊंगा ۞ दाएं कान में अज़ान और बाएं में इक़ामत कहूंगा ۞ किसी नेक बन्दे से तह़नीक कराऊंगा। (या'नी उन से दर-ख़्वास्त करूंगा कि वोह छुहारा या कोई मीठी चीज़ चबा कर इस के तालू पर लगा दें) ۞ बच्ची पैदा होने पर नाख़ुशी नहीं करूंगा बल्कि ने'मत जान कर शुक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ बजा लाऊंगा ۞ अगर लड़का हुवा तो हुसूले ब-र-कत के लिये उस का नाम "मुह़म्मद" या "अह़मद" रखूंगा ۞ बच्चे/बच्ची को फ़ौरन किसी जामेए शराइत़ पीर साह़िब का मुरीद करवाऊंगा।

﴾27﴿ बच्चे का नाम रखने की निय्यतें

۞ जिन नामों की अह़ादीसे मुबा-रका में तरग़ीब आई है वोह नाम रखूंगा ۞ फ़िल्मी अदाकारों, खिलाड़ियों वग़ैरा के नामों के मुत़ाबिक़ नाम रखने के बजाए निस्बत की ब-र-कतें लेने के लिये अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और दीगर बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن के नामों पर नाम रखूंगा ۞ हो सका तो उ़-लमाए किराम से नाम रखवाऊंगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

﴾28﴿ अ़क़ीक़े की निय्यतें

۞ सुन्नत समझ कर अ़क़ीक़ा करूंगा ۞ ख़ुशदिली के साथ क़ीमती जानवर राहे ख़ुदा में क़ुरबान करूंगा ۞ लड़की के लिये एक बकरी और

लड़के के लिये दो बकरे ज़ब्ह करूंगा ۞ सातवें दिन अ़क़ीक़ा करूंगा ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾29﴿ सिलए रेह़मी की निय्यतें

۞ सवाब के लिये सिलए रेह़मी (या'नी रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक) करूंगा ۞ उन को ज़रूरत हुई तो मुम्किना सूरत में मदद करूंगा ۞ अगर उन की त़रफ़ से ईज़ा पहुंची तो सब्र करूंगा और सिलए रेह़मी जारी रखूंगा ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾30﴿ तिजारत की निय्यतें

۞ सिर्फ़ रिज़्क़े ह़लाल कमाऊंगा ۞ मुआ़-मलात (म-सलन ख़रीदो फ़रोख़्त) में दियानत दारी से काम लूंगा ۞ ह़िर्स से बचूंगा ۞ अपने माल की झूटी ता'रीफ़ नहीं करूंगा ۞ झूट, धोकाबाज़ी, वा'दा ख़िलाफ़ी, ख़ियानत, ग़ीबत, चुग़ली, बद अख़्लाक़ी, अबे तबे और तू तड़ाक़ वाले ग़ैर मुहज़्ज़ब अन्दाज़े गुफ़्त-गू और मुसल्मानों की दिल आज़ारियों से बचूंगा ۞ दुकान पर मिलने वाले फ़ारिग़ अवक़ात (किसी की ह़क़ त-लफ़ी न हो इस त़रह़) ज़िक्रो दुरूद या दीनी मुत़ा-लए में गुज़ारने की सअ्य करूंगा ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾31﴿ मुला-ज़मत की निय्यतें

۞ सौंपा गया काम दियानत दारी (या'नी ईमान दारी) से करूंगा ۞ अगर ना जाइज़ काम का कहा गया तो ख़्वाह नोकरी छोड़नी पड़ जाए

हरगिज़ नहीं करूंगा ۞ इजारे में तै शुदा अवक़ात व शराइत़ पर अ़मल करूंगा ۞ इजारे के अवक़ात में (उ़र्फ़ व आ़दत से हट कर कोई) ज़ाती काम नहीं करूंगा ۞ बा जमाअ़त नमाज़ों की पाबन्दी करूंगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾32﴿ क़र्ज़ लेने की निय्यतें

۞ 100 फ़ीसद लौटा देने की निय्यत होगी तो ही वोह भी ब क़दरे ज़रूरत क़र्ज़ लूंगा[1] ۞ तै शुदा वक़्त के मुत़ाबिक़ उस का क़र्ज़ लौटा दूंगा, ख़्वाह म ख़्वाह चक्कर नहीं लगवाऊंगा ۞ उस के मुत़ा-लबे के बिग़ैर कुछ न कुछ ज़ाइद अदा कर के सवाब कमाऊंगा ۞ क़र्ज़ अदा कर के शुक्रिया अदा करूंगा और अहलो माल में ब-र-कत की दुआ़ दूंगा।[2]

﴾33﴿ क़र्ज़ देने की निय्यतें

ह़ाजत मन्दों को क़र्ज़ देते वक़्त येह निय्यतें कर सकते हैं : ۞ मुसल्मान भाई की ह़ाजत पूरी करने का सवाब कमाऊंगा ۞ रिज़ाए

مدینہ

1 : ह़ाजत के मौक़अ़ पर क़र्ज़ लेने में ह़रज नहीं, जब कि अदा करने का इरादा हो और अगर येह इरादा हो कि अदा न करेगा (तब) तो ह़राम खाता है और अगर बिग़ैर अदा किये मर गया मगर निय्यत येह थी कि अदा कर देगा, तो उम्मीद है कि आख़िरत में इस से मुवा-ख़ज़ा (या'नी पूछगछ) न हो। (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 656) 2 : नसाई ने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की कहते हैं : मुझ से हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़र्ज़ लिया था। जब हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के पास माल आया, अदा फ़रमा दिया और दुआ़ दी कि **अल्लाह** तआ़ला तेरे अहलो माल में ब-र-कत करे और फ़रमाया : "क़र्ज़ का बदला शुक्रिया है और अदा कर देना"

(نسائی ص ۷۵۳ حدیث ٤٦٩٢, बहारे शरीअ़त, जि. 2, स. 754)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोजे़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

इलाही के लिये उस का दिल खुश करूंगा ۞ मुद्दत पूरी होने पर उसे तंगदस्त पाया तो मोहलत दे कर सवाब कमाऊंगा।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾34﴿ फ़ोन करने या वुसूल करने की निय्यतें

۞ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ कर फ़ोन करूंगा और वुसूल करूंगा ۞ मुसल्मान को "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ" कह कर सलाम में पहल करूंगा ۞ अगर मजबूरी न हुई तो फ़ौरन फ़ोन वुसूल कर के मुसल्मान की तश्वीश दूर करूंगा (क्यूं कि फ़ोन वुसूल न होने की सूरत में अक्सर बे क़रारी होती है) ۞ कम अज़ कम एक बार ! صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب कहूंगा ۞ दूसरों की मौजू-दगी में मुख़ातब की इजाज़त के बिग़ैर फ़ोन का स्पीकर ऑन नहीं करूंगा ۞ बिग़ैर इजाज़त किसी का फ़ोन रिकॉर्ड नहीं करूंगा ۞ गुनाहों भरी गुफ़्त-गू (म-सलन ग़ीबत, चुग़ली वग़ैरा) से बचूं और बचाऊंगा ۞ इख़्तिताम पर भी सलाम करूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾35﴿ अपने पास फ़ोन रखने की निय्यतें

۞ म्यूज़ीकल ट्यून्ज़ से खुद भी बचूंगा और दूसरों को भी बचाऊंगा ۞ सवाब के कामों में इस्ति'माल करूंगा (म-सलन उ़-लमा से

1 : एक शख़्स (ज़मानए गुज़श्ता में) लोगों को उधार दिया करता था, वोह अपने ग़ुलाम से कहा करता : "जब किसी तंगदस्त मद्यून (या'नी मक़रूज़) के पास जाना उस को मुआफ़ कर देना इस उम्मीद पर कि खुदा हम को मुआफ़ कर दे, जब उस का इन्तिक़ाल हुवा **अल्लाह** तआला ने मुआफ़ फ़रमा दिया।" (بخاری ج۲ص۴۷۰حدیث۳٤۸۰, बहारे शरीअ़त, जि. 2, स. 762)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

मसाइल दरयाफ़्त करना, सिलए रेह़्मी, मुबारक बाद, इ़यादत, ता'ज़ियत, नेकी की दा'वत, रिज़्क़े ह़लाल की जुस्त-जू वग़ैरा) ۞ बिला सख़्त ज़रूरत सोए हुए को फ़ोन कर के उस की नींद ख़राब नहीं करूंगा ۞ मस्जिद, इज्तिमाअ़, म-दनी मुज़ा-करे, म-दनी मश्वरे और मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िरी वग़ैरा मवाक़ेअ़ पर फ़ोन बन्द रखूंगा ۞ किसी का फ़ोन आने पर ख़ुशी हुई तो मुसल्मान को राज़ी करने का सवाब कमाने की निय्यत से ख़ुशी का इज़्हार करूंगा। (ना गवारी का इज़्हार दिल आज़ार साबित हो सकता है)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾36﴿ बिजली इस्ति'माल करने की निय्यतें

۞ कम्पयूटर, फ़्रीज, वॉशिंग मशीन, गीज़र, A.C. पंखा, बत्ती वग़ैरा चलाते वक़्त ब निय्यते सवाब بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ूंगा ۞ जहां एक बल्ब से काम चल सकता होगा बिला ज़रूरत ज़ाइद बल्ब रोशन नहीं करूंगा ۞ ज़रूरत पूरी हो चुकने पर इसराफ़ से बचने की **निय्यत** से بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ कर फ़ौरन बन्द (Off) कर दूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾37﴿ पंखा या A.C. या वॉशिंग मशीन चलाने की निय्यतें

۞ नमाज़ पढ़ते वक़्त चला रहे हों तो येह निय्यत करें : ख़ुशूअ़ (या'नी दिल जम्ई) पर मदद ह़ासिल करने की निय्यत से **पंखा** या **A.C.**

चलाऊंगा ۞ सोने के लिये चलाते वक़्त : नींद पर मदद ह़ासिल करने और नींद के ज़रीए इ़बादत पर कुव्वत पाने के लिये पंखा (या A.C.) चला रहा हूं ۞ ज़रूरत पूरी हो जाने के बा'द निय्यत कीजिये : इसराफ़ से बचने के लिये बन्द कर रहा हूं ۞ दूसरों की मौजू-दगी में निय्यत : घर के दूसरे अफ़राद या मेहमानों को फ़रह़त पहुंचाने और उन की दिलजूई के लिये पंखा या **A.C.** चला रहा हूं ۞ सफ़ाई की सुन्नत पर मदद ह़ासिल करने के लिये वॉशिंग मशीन ऑन (on) कर रहा हूं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾38﴿ कम्पयूटर के मु-तअ़ल्लिक़ निय्यतें

۞ गुनाहों भरे मनाज़िर देखने से बचूंगा ۞ अगर अचानक औ़रत की तस्वीर स्क्रीन पर आ गई तो फ़ौरन नज़र हटा लूंगा और उसे दूर कर दूंगा ۞ ज़रूरत पूरी हो जाने पर इसराफ़ से बचने के लिये फ़ौरन बन्द कर दूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾39﴿ म-दनी चेनल देखने की निय्यतें

۞ रिज़ाए इलाही के लिये रोज़ाना कम अज़ कम एक घन्टा 12 मिनट म-दनी चेनल देखूंगा ۞ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ कर ऑन ऑफ़ करूंगा ۞ ऑन होने की सूरत में अगर कोई एक भी देखने या सुनने वाला मौजूद न हुवा तो इसराफ़ से बचने की निय्यत से फ़ौरन बन्द कर

दूंगा ۞ इल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये देखूंगा ۞ जब जब صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! सुनूंगा दुरूदे पाक पढ़ूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾40﴿ दीनी किताब पढ़ने की निय्यतें

۞ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये, हो सका तो बा वुज़ू और क़िब्ला रू हो कर मुत़ा-लआ़ करूंगा ۞ मौक़अ़ की मुना-सबत से عَزَّوَجَلَّ, صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ, رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पढ़ूंगा ۞ अगर कोई बात समझ न आई तो उ़-लमा से पूछ लूंगा ۞ अपनी ज़ाती किताब पर जहां जहां ज़रूरत होगी अन्डर लाइन करूंगा ۞ याद दाश्त के इशारे लिखूंगा ۞ किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो मुसन्निफ़ या नाशिरीन को तह़रीरन मुत्तलअ़ करूंगा। (नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾41﴿ दीनी मद्रसे में पढ़ने की निय्यतें

۞ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने के लिये इ़ल्मे दीन ह़ासिल करूंगा ۞ शदीद मजबूरी के बिग़ैर छुट्टी नहीं करूंगा ۞ द-रजे में बा वुज़ू, ता'ज़ीमे इ़ल्मे दीन के लिये साफ़ सुथरे कपड़े पहन कर ख़ुश्बू लगा कर शरीक हुवा करूंगा ۞ दीनी कुतुब और असातिज़ा का अदब करूंगा ۞ जो सीखूंगा वोह दूसरों को सिखाने में बुख़्ल नहीं करूंगा ۞ मद्रसे के जद्वल पर अ़मल करूंगा ۞ वक़्फ़ की अश्या में ग़ैर शर-ई तसर्रुफ़

नहीं करूंगा ۞ म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र और दीगर म-दनी काम करता रहूंगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾42﴿ इ़ल्मे दीन/कुरआने मुबीन पढ़ाने की निय्यतें

۞ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने के लिये पढ़ाऊंगा ۞ द-रजे में बा वुज़ू हो कर ता'ज़ीमे इ़ल्मे दीन (या तक्रीमे कुरआने मुबीन) के लिये साफ़ सुथरे कपड़े पहन कर ख़ुश्बू लगा कर शरीक हुवा करूंगा ۞ अगर त़-लबा को कोई बात समझ न आई तो बार बार समझाने में सुस्ती नहीं करूंगा ۞ किसी उस्ताज़ या त़ालिबे इ़ल्म बल्कि किसी भी मुसल्मान की ग़ीबत नहीं करूंगा ۞ चीख़म चाख़ करने, ग़ैर मुहज़्ज़ब फ़िक़्रे बोलने और हर त़रह़ की बद अख़्लाक़ी से ख़ुद को बचाते हुए त़-लबा को आ'ला अख़्लाक़ की ता'लीम देने की सअ़्य करूंगा ۞ त़-लबा को वक़्तन फ़ वक़्तन दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों की तरग़ीब देता रहूंगा ۞ ख़ुद भी म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र किया करूंगा ۞ कुरआने करीम पढ़ाने में तज्वीद के क़वाइद मल्हूज़ रखूंगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾43﴿ तिलावत करने की निय्यतें

۞ कुरआने करीम की ब निय्यते सवाब ज़ियारत करूंगा, ता'ज़ीमन छूऊंगा, चूमूंगा, आंखों से लगाऊंगा और सर पर रखूंगा ۞

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنز العمال)

اَعُوۡذُ की इताअ़त करते हुए **अल्लाह** व **रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عليه واٰلهٖ وسلّم और بِسۡمِ الله पढ़ कर तिलावत करूंगा ۞ क़वाइदे तज्वीद या'नी हुरूफ़ की दुरुस्त मख़ारिज के साथ अदाएगी, रुमूज़े अवक़ाफ़, मा'रूफ़ तरीके़ और मद्दात का ख़याल रखते हुए ठहर ठहर कर पढूंगा ۞ बा वुज़ू क़िब्ला रू दो ज़ानू बैठ कर तिलावत करूंगा ۞ हुक्मे ह़दीस पर अ़मल करते हुए दौराने तिलावत रोऊंगा रोना न आया तो रोने जैसी शक्ल बनाऊंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾44﴿ तिलावत सुनने की निय्यतें

۞ रिज़ाए इलाही के लिये हुक्मे कुरआनी पर अ़मल करते हुए कान लगा कर ख़ूब तवज्जोह के साथ चुपचाप तिलावत सुनूंगा ۞ अपने इख़्तियार में हुवा और दिल में इख़्लास पाया तो हुक्मे ह़दीस पर अ़मल करते हुए अश्कबारी करते हुए और येह न हो सका तो रोने वालों जैसी सूरत बनाए तिलावत सुनूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾45﴿ दुरूद शरीफ़ पढ़ने की निय्यतें

۞ **अल्लाह** व **रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عليه واٰلهٖ وسلّم की इताअ़त की निय्यत से दुरूद शरीफ़ पढूंगा ۞ हो सका तो सर झुकाए, आंखें बन्द किये सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तसव्वुर बांध कर दुरूद शरीफ़ पढूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (حاکم)

《46》 ना'त शरीफ़ पढ़ने सुनने की निय्यतें

۞ **अल्लाह** व **रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلّم की रिज़ा के लिये हत्तल वस्अ़ बा वुज़ू, आंखें बन्द किये, सर झुकाए, गुम्बदे ख़ज़रा बल्कि मकीने गुम्बदे ख़ज़रा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तसव्वुर बांध कर ना'त शरीफ़ पढूं और सुनूंगा ۞ रोना आया और रियाकारी का ख़दशा महसूस हुवा तो रोना बन्द करने के बजाए रियाकारी से बचने की कोशिश करूंगा ۞ किसी को रोता तड़पता देख कर बद गुमानी नहीं करूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

《47》 आ़लिमे दीन की ख़िदमत में ह़ाज़िरी की निय्यतें

۞ ज़ियारत, सलाम, मुसा-फ़ह़ा और दस्त बोसी करूंगा[1] ۞ हो सका तो ह़स्बे तौफ़ीक़ कुछ न कुछ नज़राना पेश करूंगा[2] ۞ बे हिसाब मग़्फ़िरत की दुआ़ के लिये दर-ख़्वास्त करूंगा ۞ इम्तिहानन सुवाल नहीं करूंगा ۞ मस्अला मा'लूम करना हुवा तो इजाज़त ले कर बा अदब अ़र्ज़ करूंगा ۞ अपने कारनामे सुनाने के बजाए ता'ज़ीमन दो ज़ानू बैठ कर सर झुकाए ख़ामोश रह कर उन की गुफ़्त-गू से फ़ैज़याब

1 : कुरआने अ़ज़ीम बे छूए देखना, का'बए मुअ़ज़्ज़मा पर बैरूने मस्जिद से नज़र करना, आ़लिम को ब निगाहे ता'ज़ीम देखना, मां बाप को ब नज़रे महब्बत देखना, आ़लिम से मुसा-फ़ह़ा करना, येह सब इबादाते ब-दनिय्या हैं और सब बह़ाले जनाबत (या'नी ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने की सूरत में) भी रवा (या'नी जाइज़) हैं। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 557)
2 : चीज़ देने के बजाए उ़-लमा को रक़म देना ज़ियादा मुफ़ीद होता है क्यूं कि हम ने जो चीज़ पेश की हो सकता है वोह उन को काम न आए।

होउंगा ۞ उन की मरज़ी के ख़िलाफ़ ज़ियादा देर ह़ाज़िर रहने पर इसरार नहीं करूंगा ۞ इजाज़त ले कर रुख़्सत होउंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾48﴿ मज़ारात पर ह़ाज़िरी की निय्यतें

۞ रिज़ाए इलाही के लिये बा वुज़ू मज़ार पर ह़ाज़िरी दूंगा ۞ क़दमों की त़रफ़ से आ कर चार हाथ दूर रहते हुए क़िब्ले को पीठ और साह़िबे मज़ार के चेहरे की त़रफ़ रुख़ कर के हाथ बांध कर अ़र्ज़ करूंगा : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدِی (या'नी आप पर सलाम हो ऐ मेरे सरदार !) ۞ ईसाले सवाब करूंगा ۞ उन के वसीले से दुआ़ करूंगा ۞ मज़ार शरीफ़ को पीठ करने से ह़त्तल इम्कान बचूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾49﴿ नेकी की दा'वत और इन्फ़िरादी कोशिश की निय्यतें

۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर नेकी की दा'वत देने के लिये इन्फ़िरादी कोशिश करूंगा ۞ सलाम के बा'द गर्म-जोशी से हाथ मिलाऊंगा ۞ ह़त्तल इम्कान नीची निगाहें किये बातचीत करूंगा (नीची निगाहें कर के इन्फ़िरादी कोशिश करने से नेकी की दा'वत का फ़ाएदा اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ मज़ीद बढ़ जाएगा) ۞ सुन्नत पर अ़मल की निय्यत से मुस्कुरा कर बात करूंगा ۞ सामने वाले के ह़स्बे ह़ाल सुन्नतों भरे

इज्तिमाअ़ में शिर्कत या म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र या म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल का ज़ेह्न देने की सअ़्य करूंगा[1] ۞ अगर इन्फ़िरादी कोशिश का अच्छा नतीजा सामने आया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम समझूंगा और शुक्रे इलाही बजा लाऊंगा और अगर कोई ना ख़ुश गवार बात पेश आई तो सामने वाले को सख़्त दिल वग़ैरा समझने के बजाए इसे अपने इख़्लास की कमी तसव्वुर करूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾50﴿ बुराई से मन्अ़ करने की निय्यतें

۞ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने और सवाबे आख़िरत कमाने के लिये बुराई से मन्अ़ करूंगा ۞ हत्तल इम्कान तन्हाई में और ख़ूब नरमी से समझाऊंगा ۞ बिलफ़र्ज़ उस ने ना मुनासिब अन्दाज़ इख़्तियार किया तो सब्र करूंगा और इस्लाह क़बूल की तो उसे अपना कमाल नहीं बल्कि रब عَزَّوَجَلَّ की अ़ता समझूंगा ۞ नाकामी की सूरत में उसे ज़िद्दी वग़ैरा समझने के बजाए अपने इख़्लास की कमी तसव्वुर करूंगा।

مدینہ

1 : नए इस्लामी भाई को एक दम से दाढ़ी रखने और इ़मामा शरीफ़ पहनने की तल्क़ीन के बजाए नमाज़ की फ़ज़ीलत वग़ैरा बताई जाए। हां जिस से बात कर रहे हैं वोह "शेव्ड" है और ज़न्ने ग़ालिब है कि इस को मुंडाने से तौबा करवा कर दाढ़ी बढ़ाने का कहेंगे तो मान जाएगा तब तो उस को दाढ़ी मुंडाने से मन्अ़ करना वाजिब हो जाएगा, मगर उ़मूमन नए इस्लामी भाई पर "ज़न्ने ग़ालिब" होना दुश्वार होता है, अ़मल के जज़्बे की कमी का दौर है, नए इस्लामी भाई को दाढ़ी रखने का इसरार करने पर हो सकता है आयिन्दा आप के सामने आने ही से कतराए।

﴾51﴿ बयान करने की निय्यतें

﴾ म-दनी चेनल के मुबल्लिग़ीन भी ह़स्बे ह़ाल निय्यतें कर सकते हैं ﴿

۞ ह़म्दो सलात और म-दनी माह़ोल में पढ़ाए जाने वाले दुरूदो सलाम पढ़ाऊंगा ۞ दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत बता कर صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! कहूंगा यूं ख़ुद भी दुरूदे पाक पढ़ूंगा और दूसरों को भी पढ़ाऊंगा ۞ सुन्नी आ़लिम की किताब से पढ़ कर बयान करूंगा ۞ पारह 14, **सू-रतुन्नह़्ल**, आयत 125 : اُدْعُ اِلٰی سَبِیْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ **(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (ह़दीस 4361) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّیْ وَ لَوْ اٰیَة या'नी "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" में दिये हुए अह़काम की पैरवी करूंगा ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़-रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा ۞ म-दनी क़ाफ़िले, म-दनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त बनाने की ख़ात़िर ह़त्तल इम्कान निगाहें नीची रखूंगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

﴿52﴾ बयान सुनने की निय्यतें

﴾ म-दनी चेनल के नाज़िरीन भी इन में से ह़स्बे ह़ाल निय्यतें कर सकते हैं ﴿

۞ निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा ۞ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب، اُذْكُرُوا الله، تُوبُوْا اِلَى الله वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसा-फ़ह़ा और इन्फ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿53﴾ मुलाक़ात की निय्यतें

۞ ब निय्यते अदाए सुन्नत सलाम करूंगा ۞ सुन्नत के मुत़ाबिक़ दोनों हथेलियों से बिला ह़ाइल मुसा-फ़ह़ा करूंगा ۞ किसी ने बुलाया, पुकारा या तवज्जोह चाही तो **लब्बैक** कहूंगा[1] ۞ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने, इत्तिबाए़ सुन्नत और स-दक़े का सवाब कमाने और मुसल्मान के

मदीना

1 : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के वालिदे माजिद रईसुल मु-तकल्लिमीन ह़ज़रत मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان लिखते हैं : जो आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को पुकारता जवाब में "लब्बैक" फ़रमाते या'नी ह़ाज़िर हूं।
(सुरूरुल क़ुलूब बि ज़िक्रिल मह़बूब, स. 182)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

दिल में ख़ुशी दाख़िल करने की निय्यत से **मुस्कुराऊंगा** ❁ उस की मुलाक़ात पर दिल ख़ुश हुवा तो इस का इज़्हार कर के उस का भी दिल ख़ुश करूंगा (अपने दिल में ना गवारी पैदा होने की सूरत में उसे इस बात का एह़सास नहीं होने दूंगा और झूट भी नहीं बोलूंगा कि आप से मिल कर ख़ुशी हुई) ❁ उस की झूटी ता'रीफ़ नहीं करूंगा ❁ ग़ीबत व चुग़ली वग़ैरा नीज़ फ़ुज़ूल गोई से बचूंगा ❁ बिला ज़रूरत सुवालात नहीं करूंगा[1] ❁ दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के लिये उस पर इन्फ़िरादी कोशिश करूंगा ❁ वक़्ते रुख़्सत (अच्छा ! ख़ुदा ह़ाफ़िज़ ! वग़ैरा कहने के बजाए) सलाम करूंगा । (सलाम के बा'द ख़ुदा ह़ाफ़िज़ कहने में ह़रज नहीं)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾54﴿ म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करने की निय्यतें

❁ रिज़ाए इलाही के लिये नेकियों में इज़ाफ़े, इन पर इस्तिक़ामत पाने और गुनाहों से बचने की कोशिश के ज़िम्न में रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए "म-दनी इन्आ़मात" का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ को जम्अ़ करवाऊंगा ❁ अगर नुमायां ता'दाद में म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल हुवा तो रिया के ह़म्लों से बचने के लिये

---

1 : म-सलन : कहां से आ रहे हो ? कहां जा रहे हो ? वहां क्या काम है ? कहां मुला-ज़मत है ? वालिद साह़िब क्या काम करते हैं ? बच्चे कितने हैं ? कितने भाई बहन हैं ? कहां तक ता'लीम है ? वग़ैरा वग़ैरा ।

बिला ज़रूरत किसी पर अ़दद ज़ाहिर नहीं करूंगा ۞ जिन का अ़मल कम हुवा उन को ह़क़ीर जानने से बचूंगा ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾55﴿ कुफ़्ले मदीना लगाने की निय्यतें

۞ बद कलामी और बद निगाही के साथ साथ फ़ुज़ूल कलामी और फ़ुज़ूल निगाही से बचने की आ़दत बनाने के लिये रिज़ाए इलाही की ख़ातिर ज़बान और आंखों का **कुफ़्ले मदीना** लगाऊंगा ۞ कुछ न कुछ इशारे से या लिख कर भी गुफ़्त-गू करूंगा हर म-दनी माह की पहली पीर शरीफ़ को **यौमे कुफ़्ले मदीना** मनाऊंगा और इस में मक-त-बतुल मदीना का रिसाला "**ख़ामोश शहज़ादा**" पढ़ूं या सुनूंगा (ताकि ख़ामोशी का मज़्बूत़ ज़ेह्न बने) ۞ पैदल चलने में बिला ज़रूरत इधर उधर देखने के बजाए नीची नज़र, किसी से गुफ़्त-गू करते हुए अपने क़दमों के क़रीब तरीन फ़र्श पर और बैठे होने की सूरत में अपनी गोद में या इसी त़रह़ क़रीबी ह़िस्सए ज़मीन पर नज़र रखने की कोशिश करूंगा ۞ दौराने सफ़र गाड़ी में (ड्राइविंग के इलावा) बिला ज़रूरत बाहर देखने से ह़त्तल इम्कान बचूंगा ۞ ग़फ़्लत भरी ख़ामोशी से बचने के लिये ज़िक्रो दुरूद की कसरत भी करूंगा और कुछ न पढ़ने की सूरत में कभी **मक्कए मुकर्रमा** और **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا का तसव्वुर बांधूंगा तो कभी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर, अपने गुनाहों, मौत, ख़ातिमे,

मुर्दे की बे बसी, मुर्दे के सदमे, क़ब्रो आख़िरत और पुल सिरात़ की दह्शत, जन्नत व जहन्नम वग़ैरा के मु-तअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र और अपना मुह़ा-सबा करूंगा।[1]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

《56》 म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यतें

۞ अगर शर-ई मिक्दार का सफ़र हुवा तो घर में रवानगिये सफ़र की ग़ैर मक्रूह वक़्त में दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करूंगा ۞ हर बार सब के साथ मिल कर सुवारी की दुआ़, एह़तियाती़ तौबा व तज्दीदे ईमान और गुनाहों से तौबा करूंगा ۞ अमीरे क़ाफ़िला की इत़ाअ़त और म-दनी क़ाफ़िले के जद्वल की पाबन्दी करूंगा ۞ ज़बान, आंखों और **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** लगाऊंगा ۞ हर मौक़अ़ पर "म-दनी इन्आ़मात" पर अ़मल जारी रखूंगा ۞ वुज़ू, नमाज़ और क़ुरआने करीम पढ़ने में जो ग़-लतियां हैं वोह आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में रह कर दुरुस्त करूंगा। (जो जानता हो वोह येह निय्यत करे कि सिखाऊंगा) ۞ सुन्नतें और दुआ़एं सीखूं और सिखाऊंगा ۞ तमाम फ़र्ज़ नमाज़ें मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा करूंगा ۞ तहज्जुद, इशराक़, चाश्त और अव्वाबीन के नवाफ़िल और सलातुत्तौबा पढ़ूंगा ۞ "सदाए मदीना

1 : **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : (आख़िरत के मुआ़-मले में) घड़ी भर के लिये ग़ौरो फ़िक्र करना 60 साल की इ़बादत से बेहतर है। (اَلْجَامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطِی ص۳۶۵ حدیث ۵۸۹۷)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया । (طبرانی)

मदीना" लगाऊंगा या'नी नमाज़े फ़ज्र के लिये मुसल्मानों को जगाऊंगा ۞ मौक़अ़ मिला तो दर्स दूंगा और सुन्नतों भरा बयान करूंगा ۞ मुसल्मानों से पुर तपाक त़रीक़े पर मुलाक़ात कर के उन पर ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिश करूंगा और म-दनी क़ाफ़िले में हाथों हाथ सफ़र के लिये तय्यार करूंगा ۞ अपने लिये, घर वालों के लिये और उम्मते मुस्लिमा के लिये दुआ़ए ख़ैर करूंगा ۞ हर वक़्त साथ रहने में ह़क़ त-लफ़ियों का इम्कान बढ़ जाता है लिहाज़ा वापसी पर फ़र्दन फ़र्दन इन्तिहाई लजाजत के साथ मुआ़फ़ी मांगूंगा ۞ (शर-ई) सफ़र से वापसी पर घर वालों के लिये तोह़फ़ा ले जाने की सुन्नत अदा करूंगा ۞ (सफ़र अगर शर-ई हुवा तो) मस्जिद में आ कर ग़ैर मक्रूह वक़्त में वापसिये सफ़र के दो नफ़्ल पढ़ूंगा ۞ ह़स्बे ह़ाल मज़ीद अच्छी अच्छी निय्यतें करता रहूंगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾57﴿ लंगरे रसाइल की निय्यतें

۞ लंगरे रसाइल के ज़रीए राहे ख़ुदा में ख़र्च, नेकी की दा'वत और इशाअ़ते इ़ल्मे दीन का सवाब कमाऊंगा ۞ जिसे रिसाला या किताब या V.C.D. तोह़फ़े में दूंगा ह़त्तल इम्कान उस से पढ़ने/सुनने का हदफ़ भी ले लूंगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلٰی)

﴾58﴿ म-दनी मश्वरा करने और देने की निय्यतें

۞ मश्वरा करने की सुन्नत पर अ़मल और अच्छा मश्वरा देने वाले की ह़ौसला अफ्ज़ाई करूंगा नीज़ नाक़िस मश्वरा देने वाले की दिल शि-कनी से बचूंगा ۞ किसी के मश्वरे पर अ़मल के नतीजे में नुक़्सान उठाना पड़ा तो उस को इस का ज़िम्मेदार नहीं ठहराऊंगा ۞ जब कोई मुझ से मश्वरा मांगेगा तो दियानत दारी के साथ दुरुस्त मश्वरा दूंगा ۞ अपने दिये हुए मश्वरे पर ही अ़मल का इसरार और अ़मल न किया तो नाराज़ी का इज़्हार नहीं करूंगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾59﴿ म-दनी कामों की कारकर्दगी जम्अ़ करवाने में निय्यतें

۞ रियाकारी से बचते हुए म-दनी मर्कज़ के हुक्म पर अ़मल और ज़िम्मेदार की दिलजूई के लिये मुक़र्ररा वक़्त के अन्दर अन्दर दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों की कारकर्दगी जम्अ़ करवा दूंगा ۞ कारकर्दगी नाक़िस मानी गई तो किसी को इल्ज़ाम देने के बजाए उसे अपने इख़्लास की कमी तसव्वुर करूंगा ۞ अच्छी कारकर्दगी को अपना कारनामा नहीं रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की अ़ता समझूंगा ۞ उ़म्दा कारकर्दगी पर ह़ौसला अफ्ज़ाई के लिये ता'रीफ़ी कलिमात सुनने की ख़्वाहिश दबाऊंगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

《60》 दा'वते इस्लामी के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की निय्यतें

❁ **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी दस दिन (या पूरे माह) के सुन्नते ए'तिकाफ़ के लिये जा रहा हूं ❁ रोज़ाना पांचों नमाज़ें पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा करूंगा ❁ रोज़ाना तहज्जुद, इशराक़, चाश्त, अव्वाबीन और कम अज़ कम ताक़ रातों में सलातुत्तस्बीह़ अदा करूंगा ❁ तिलावत और ज़िक्रो दुरूद की कसरत करूंगा ❁ ए'तिकाफ़ के जद्वल पर अ़मल करते हुए सीखने सिखाने के ह़ल्क़ों में शरीक होउंगा ❁ (आ़लमी म-दनी मर्कज़ में मो'तकिफ़ हुवा तो रोज़ाना और कहीं दूसरे मक़ाम पर ए'तिकाफ़ किया और इब्तिदाई 20 रोज़ों में म-दनी चेनल के ज़रीए ख़ारिजे मस्जिद तरकीब बनी तो) अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा म-दनी मुज़ा-करों में शिर्कत करूंगा ❁ ज़बान, आंख और पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगाऊंगा ❁ किसी से ईज़ा पहुंची तो अ़फ़्वो दर गुज़र से काम लेते हुए सिर्फ़ो सिर्फ़ नरमी और सब्र से काम लूंगा ❁ मस्जिद को हर त़रह़ की बदबू और आलू-दगी से बचाऊंगा ❁ ब निय्यते ह़या सोने में "पर्दे में पर्दा" का हर त़रह़ से ख़याल रखूंगा (सोते वक़्त पाजामे पर तहबन्द बांध कर मज़ीद ऊपर से चादर ओढ़ लेनी मुफ़ीद है। म-दनी क़ाफ़िले में, घर में और हर जगह इस का ख़याल रखना चाहिये।) ❁ किसी की कोई चीज़ (म-सलन तोलिया, चादर, कंघा नीज़ इस्तिन्जा ख़ाने जाने के लिये दूसरों के चप्पल वग़ैरा) इस्ति'माल नहीं करूंगा ❁ अपने लिये, घर वालों, अह़बाब और सारी उम्मत के लिये दुआ़एं करूंगा ❁ चांद रात को

हाथों हाथ म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बनूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

《61》 नाख़ुन काटने की निय्यतें

۞ जुमुए़ के दिन नाखु़न काट कर मुस्तह़ब पर अ़मल करूंगा ۞ प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इर्शाद फ़रमाई हुई तरतीब के मुत़ाबिक़ हाथों के नाखु़न काटूंगा[1] ۞ नाखु़न का तराशा (या'नी कटे हुए नाखु़न) **बैतुल ख़ला** (WASHROOM) या गु़स्ल ख़ाने में नहीं डालूंगा (क्यूं कि येह मक्रूह है और इस से बीमारी पैदा होती है)।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

《62》 ज़ुल्फ़ें रखने की निय्यतें

۞ सुन्नत के मुत़ाबिक़ आधे कान तक या पूरे कान तक या कन्धों से छू जाने तक ज़ुल्फ़ें रखूंगा[2] ۞ सर के तमाम बाल पूरे रखूंगा, क़लमों वग़ैरा के पास से नहीं सिर्फ़ गुद्दी की त़रफ़ से कटवाऊंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदीना

1 : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है, कि दहने (या'नी सीधे) हाथ की कलिमे की उंगली से शुरूअ़ करे और छुंग्लिया पर ख़त्म करे फिर बाएं (या'नी उलटे) की छुंग्लिया से शुरूअ़ कर के अंगूठे पर ख़त्म करे। इस के बा'द दहने (या'नी सीधे) हाथ के अंगूठे का नाखु़न तरश्वाए, इस सूरत में दहने (सीधे) ही हाथ से शुरूअ़ हुवा और दहने (सीधे) पर ख़त्म भी हुवा। (درمختار ج۹ ص۱۷۰, बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 583 ता 584)

2 : मर्द के लिये कन्धों से नीचे तक ज़ुल्फ़ें बढ़ाना ह़राम है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगै़र उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الایمان)

﴾63﴿ सर और दाढ़ी के बालों में मेहंदी लगाने की निय्यतें

۞ मुस्तह़ब पर अ़मल करने का सवाब कमाने के लिये بِسۡمِ اللهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡم पढ़ कर सफे़द बालों को (पीली या सुर्ख़) मेहंदी से रंगता हूं[1] ۞ मेहंदी (ख़ास तौ़र पर सर पर) लगा कर नहीं सोऊंगा । (बीनाई जाते रहने का अन्देशा है)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾64﴿ इस्लामी बहनों के लिये मेहंदी लगाने की निय्यतें

۞ بِسۡمِ اللهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡم पढ़ कर हुक्मे ह़दीस पर अ़मल करते हुए मेहंदी से हाथ रंगूंगी ۞ जिर्मदार (या'नी जिस की तह जमती हो ऐसी) मेहंदी नहीं लगाऊंगी ۞ मेहंदी से रंगे हुए हाथ (बल्कि बिगै़र मेहंदी के भी) ना महरम पर ज़ाहिर नहीं होने दूंगी[2] ۞ छोटे बच्चों के हाथ पाउं में मेहंदी नहीं लगाऊंगी ।[3] (छोटी बच्चियों को लगाने में ह़रज नहीं)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 : "शर्हुस्सुदूर" सफ़ह़ा 152 पर ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है : जो शख़्स दाढ़ी में ख़िज़ाब (काले ख़िज़ाब या काली मेहंदी के इ़लावा म-सलन लाल या ज़र्द मेहंदी का) लगाता हो । इन्तिका़ल के बा'द मुन्कर नकीर उस से सुवाल न करेंगे । मुन्कर कहेगा : ऐ नकीर ! मैं उस से क्यूंकर सुवाल करूं जिस के चेहरे पर इस्लाम का नूर चमक रहा है । 2 : गै़र मह़रमों की नज़र से हथेलियां बचाने के लिये दा'वते इस्लामी वालियों में काले दस्ताने राइज हैं जो कि निहायत उ़म्दा अन्दाज़ है, खु़सूसन अ़रब ख़वातीन में भी येह दस्ताने पहने जाते हैं । 3 : बच्चों के हाथ पाउं में बिला ज़रूरत मेहंदी लगाना "ना जाइज़" है, औ़रत खु़द अपने हाथ पाउं में लगा सकती है, मगर लड़के को लगाएगी तो गुनहगार होगी । (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 428)

﴾65﴿ पर्दे की निय्यतें (इस्लामी बहनों के लिये)

۞ शर-ई इजाज़त के तह़त घर से बाहर निकलना हुवा तो ब निय्यते सवाब मुकम्मल शर-ई पर्दा कर लूंगी, आते जाते अपनी गली में बल्कि (फ़्लेट हुवा तो) सीढ़ी पर भी पर्दा क़ाइम रखते हुए चेहरे पर निक़ाब डाले रहूंगी ۞ जाज़िबे नज़र बुरक़अ़ ओढ़ कर बाहर नहीं निकलूंगी ۞ ना मह़रम से बात करने की नौबत आई तो हुक्मे क़ुरआनी पर अ़मल करते हुए लोचदार या'नी नर्म व मुलायम गुफ़्त-गू से बचूंगी।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾66﴿ सुरमा लगाने की निय्यतें

۞ सोते वक़्त आंखों में सुरमा लगाने की सुन्नत पर अ़मल करूंगा ۞ सियाह सुरमा या काजल ज़ीनत की निय्यत से नहीं लगाऊंगा[1] ۞ कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां, कभी दाईं (सीधी) आंख में तीन और बाईं (उलटी) में दो, तो कभी दोनों आंखों में दो दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुरमे वाली कर के उसी को बारी बारी दोनों आंखों में लगाऊंगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾67﴿ सोने की निय्यतें

۞ एह़तियातन तज्दीदे ईमान और हर गुनाह से तौबा करूंगा

1 : ज़ीनत की निय्यत से मर्द को सुरमा लगाना मक्रूह है और ज़ीनत मक़्सूद न हो तो कराहत नहीं। (عالمگیری ج۵ ص۳۵۹)

۞ बा वुज़ू, सोने की दुआ[1] आ-यतुल कुर्सी वग़ैरा पढ़ कर सब से आख़िर में **सू-रतुल काफ़िरून** पढ़ूंगा ۞ सोते वक़्त **क़ब्र** में सोने को याद करूंगा ۞ सीधी करवट पर सीधा हाथ रुख़्सार (या'नी गाल) के नीचे रख कर क़िब्ला रू सोऊंगा[2] ۞ मा'मूल के मुताबिक़ अवराद पढ़ने के बा'द कोशिश करूंगा कि ज़बान पर मुसल्सल **ज़िक्रुल्लाह** जारी रहे और इसी ह़ालत में नींद आ जाए[3] ۞ जागने पर मस्नून दुआ पढ़ूंगा ।[4]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾68﴿ इलाज करवाने की निय्यतें

۞ इबादत पर कुव्वत और रिज़्क़े ह़लाल कमाने पर त़ाक़त ह़ासिल करने के लिये मुस्तह़ब समझ कर इलाज करवाऊंगा ۞ दवा या गोली इस्ति'माल करने से क़ब्ल بِسْمِ اللّٰهِ الشَّافِى، بِسْمِ اللّٰهِ الْكَافِى पढ़ूंगा ۞ कैसी

1 : सोने की दुआ : اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيَا ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरे नाम के साथ ही मरता हूं और जीता हूं (या'नी सोता और जागता हूं) । (بخاری ج ٤ ص١٩٦ حديث:٦٣٢٥) 2 : सुन्नत यूं है कि कुत़्ब तारे (या'नी शिमाल) की त़रफ़ सर करे और सीधी करवट पर सोए कि सोने में भी मुंह का'बे को ही रहे । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 385) दुन्या में हर जगह कुत़्ब तारा शिमाल की जानिब नहीं पड़ेगा लिहाज़ा दुन्या के किसी भी ह़िस्से में सोएं और सर या पाउं किसी भी सम्त हों बस सीधी करवट इस त़रह़ सोएं कि चेहरा क़िब्ले की त़रफ़ रहे, सुन्नत अदा हो जाएगी । 3 : बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 436 पर है : सोते वक़्त यादे ख़ुदा में मश्ग़ूल हो, तहलील (لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله) व तस्बीह़ (سُبْحٰنَ الله) व तह़मीद (اَلْحَمْدُ لِله) पढ़े यहां तक कि सो जाए कि जिस ह़ालत पर इन्सान सोता है उसी पर उठता है और जिस ह़ालत पर मरता है क़ियामत के दिन उसी (ह़ालत) पर उठेगा । 4 : जागने की दुआ : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْٓ اَحْيَانَا بَعْدَ مَآ اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हमें मारने के बा'द ज़िन्दा किया और उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है । (بخاری ج ٤ ص١٩٦ حديث٦٣٢٥) बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 436 पर है : (नींद से बेदार हो कर) उसी वक़्त पक्का इरादा करे कि परहेज़ गारी व तक़्वा करेगा किसी को सताएगा नहीं ।

ही सख़्त बीमारी हुई सब्र करूंगा ۞ अपने या बच्चे या घर के किसी फ़र्द के मरज़ या मुसीबत में मुब्तला होने का बिला ज़रूरत दूसरों पर इज़्हार करने से बच कर सवाब का ह़क़दार बनूंगा ۞ सिर्फ़ मर्द त़बीब (डॉक्टर) से इ़लाज करवाऊंगा (जब कि इस्लामी बहनें बिला इजाज़ते शर–ई ना मह़रम डॉक्टर से इ़लाज न करवाने की निय्यत करें) ۞ त़बीब के बताए हुए परहेज़ पर अगर क़स्दन "हां" कर दी तो उस "हां" को निभाऊंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾69﴿ मरीज़ की इ़यादत की निय्यतें

۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इ़यादत करूंगा ۞ मरीज़ से येह कहूंगा : لَا بَاْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰه[1] ۞ मरीज़ को रिसाला वग़ैरा तोह़फ़े में दे कर उस की दिलजूई करूंगा मुम्किन हुवा तो कुछ रसाइल उस के पास रखवा दूंगा ताकि येह इ़यादत करने वालों में बांट सके ۞ मायूस कुन बातों से बचते हुए उस को तसल्ली दूंगा ۞ मरज़ और इ़लाज वग़ैरा की ग़ैर ज़रूरी पूछगछ नहीं करूंगा ۞ उस के पास ज़ियादा देर नहीं रुकूंगा ۞ उस से दुआ़ की दर–ख़्वास्त करूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾70﴿ ता'ज़ियत की निय्यतें

۞ रिज़ाए इलाही के लिये इत्तिबाए़ सुन्नत में मुसीबत ज़दा की

مدینہ

1 : कोई ह़रज की बात नहीं **अल्लाह** तआ़ला ने चाहा तो येह मरज़ गुनाहों से पाक करने वाला है। (بخاری ج۲ ص۵۰۵ حدیث ۳۶۱۶)

ता'ज़ियत करते हुए सब्र की तल्क़ीन करूंगा[1] ۞ हो सका तो उस का ग़म दूर करने में अ़-मली तआवुन करूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾71﴿ जनाज़े में शिर्कत की निय्यतें

۞ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये ह़क़्क़े मुस्लिम अदा करते हुए नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर तदफ़ीन तक शरीक रहूंगा ۞ मर्हूम के लिये दुआए मग़्फ़िरत व ईसाले सवाब करूंगा ۞ अपना जनाज़ा उठना याद करते हुए हो सका तो अश्कबारी करूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾72﴿ क़ब्रिस्तान जाने की निय्यतें

۞ क़ब्रिस्तान में दाख़िले की दुआ पढ़ूंगा[2] ۞ अहले क़ुबूर को ईसाले सवाब करूंगा ۞ क़ब्रें देख कर अपनी मौत याद कर के हो सका तो आंसू बहाऊंगा ۞ वहां की शर-ई एह़तियातों पर अ़मल करूंगा (म-सलन क़ब्र पर पाउं न रखूंगा, न ही बैठूंगा, क़ब्र पर अगरबत्तियां नहीं सुलगाऊंगा, क़ब्रें मिटा कर जो नया रास्ता निकाला गया होगा उस पर नहीं चलूंगा)।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینه

1 : फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किसी मुसीबत ज़दा को तसल्ली दी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के ऐसे दो हुल्ले पहनाएगा जिन की क़ीमत सारी दुन्या नहीं हो सकती। (مُعْجَم اَوْسَط ج٦ ص٤٢٩ حديث ٩٢٩٢)

2 : वोह दुआ येह है : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَّنَحْنُ بِالْاَثَر : ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलाम हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए, तुम हम से पहले आ गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं। (عالمگیری ج ٥ ص ٣٥٠)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा–फ़हा करूं(या'नी हाथ मिलाऊं)गा । (ابن بشکوال)

एक चुप सो[100] सुख

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे हिसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

यकुम र–मज़ानुल मुबारक 1435 सि. हि.
30-06-2014

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़्रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक–त–बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म–दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़्लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म–दनी फूलों का पेम्फ़्लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

مآخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	جامع صغیر	دارالکتب العلمیۃ بیروت
بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	المدخل	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مسلم	دارابن حزم بیروت	مدارج النبوۃ	مرکز اہلسنت برکات رضا الہند
ابوداؤد	داراحیاء التراث العربی بیروت	وسائل الوصول الی شمائل رسول	دارالمنہاج جدۃ
ترمذی	دارالفکر بیروت	احیاء العلوم	دارصادر بیروت
نسائی	دارالکتب العلمیۃ بیروت	شرح الصدور	مرکز اہلسنت برکات رضا الہند
ابن ماجہ	دارالمعرفۃ بیروت	سرور القلوب بذکر المحبوب	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور
معجم کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	مراۃ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
معجم اوسط	دارالکتب العلمیۃ بیروت	درمختار	دارالمعرفۃ بیروت
کتاب الدعاء	دارالکتب العلمیۃ بیروت	عالمگیری	دارالفکر بیروت
شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
الفردوس بماثور الخطاب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** बरोजे़ क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
क़ियामत की दहशतों से नजात पाने का नुस्ख़ा	1	﴾8﴿ मुअज़्ज़िन के लिये निय्यतें	7
		﴾9﴿ इमाम के लिये निय्यतें	8
निय्यत की फ़ज़ीलत पर तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	1	﴾10﴿ खु़त्बे की निय्यतें	9
		﴾11﴿ पानी पीने की निय्यतें	9
ब वक़्ते वफ़ात अच्छी अच्छी निय्यतें (ह़िकायत)	2	﴾12﴿ खाने की निय्यतें	9
		﴾13﴿ मिल कर खाने की मज़ीद निय्यतें	10
आ़लिमे निय्यत आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का इर्शादे बा ब-र-कत	2	﴾14﴿ ख़िलाल की निय्यतें	11
		﴾15﴿ मेहमान नवाज़ी की निय्यतें	11
निय्यत के बारे में पांच अहम म-दनी फूल	3	﴾16﴿ दा'वते त़आ़म पर जाने की निय्यतें	11
निय्यतों के 72 म-दनी गुलदस्ते	4	﴾17﴿ चाय/ दूध पीने की निय्यतें	12
खु़सूसी निय्यत	4	﴾18﴿ लिबास पहनने/ उतारने की निय्यतें	12
﴾1﴿ सुब्ह़ सवेरे येह निय्यत कर लीजिये	4	﴾19﴿ तेल डालने/कंघी करने की निय्यतें	13
﴾2﴿ जूते पहनने की निय्यतें	4	﴾20﴿ इमामा शरीफ़ बांधने की निय्यतें	13
﴾3﴿ जूते उतारने की निय्यतें	5	﴾21﴿ खु़श्बू लगाने की निय्यतें	14
﴾4﴿ बैतुल ख़ला जाने की निय्यतें	5	खु़श्बू लगाने की ग़लत़ निय्यतों की निशान देही	14
﴾5﴿ वुज़ू की निय्यतें	6		
﴾6﴿ मस्जिद में जाने की निय्यतें	6	﴾22﴿ घर से निकलते वक़्त की निय्यतें	15
﴾7﴿ दुआ़ मांगने की निय्यतें	7	﴾23﴿ राह चलने / सीढ़ी चढ़ने उतरने	

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

की निय्यतें	16	﴾41﴿ दीनी मद्रसे में पढ़ने की निय्यतें	24
﴾24﴿ बैठने की निय्यतें	17	﴾42﴿ इल्मे दीन / कुरआने मुबीन पढ़ाने की निय्यतें	25
﴾25﴿ मां बाप की ख़िदमत और अपने बच्चों को प्यार करने की निय्यतें	17	﴾43﴿ तिलावत करने की निय्यतें	25
﴾26﴿ औलाद मिलने की निय्यतें	17	﴾44﴿ तिलावत सुनने की निय्यतें	26
﴾27﴿ बच्चे का नाम रखने की निय्यतें	18	﴾45﴿ दुरूद शरीफ़ पढ़ने की निय्यतें	26
﴾28﴿ अ़क़ीक़े की निय्यतें	18	﴾46﴿ ना'त शरीफ़ पढ़ने सुनने की निय्यतें	27
﴾29﴿ सिलए रेह़्मी की निय्यतें	19	﴾47﴿ आ़लिमे दीन की ख़िदमत में हाज़िरी की निय्यतें	27
﴾30﴿ तिजारत की निय्यतें	19		
﴾31﴿ मुला-ज़मत की निय्यतें	19	﴾48﴿ मज़ारात पर हाज़िरी की निय्यतें	28
﴾32﴿ क़र्ज़ लेने की निय्यतें	20	﴾49﴿ नेकी की दा'वत और इन्फ़िरादी कोशिश की निय्यतें	28
﴾33﴿ क़र्ज़ देने की निय्यतें	20		
﴾34﴿ फ़ोन करने या वुसूल करने की निय्यतें	21	﴾50﴿ बुराई से मन्अ़ करने की निय्यतें	29
﴾35﴿ अपने पास फ़ोन रखने की निय्यतें	21	﴾51﴿ बयान करने की निय्यतें	30
﴾36﴿ बिजली इस्ति'माल करने की निय्यतें	22	﴾52﴿ बयान सुनने की निय्यतें	31
﴾37﴿ पंखा या A.C. या वॉशिंग मशीन चलाने की निय्यतें	22	﴾53﴿ मुलाक़ात की निय्यतें	31
		﴾54﴿ म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करने की निय्यतें	32
﴾38﴿ कम्पयूटर के मु-तअ़ल्लिक़ निय्यतें	23		
﴾39﴿ म-दनी चेनल देखने की निय्यतें	23	﴾55﴿ कुफ़्ले मदीना लगाने की निय्यतें	33
﴾40﴿ दीनी किताब पढ़ने की निय्यतें	24	﴾56﴿ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यतें	34

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

«57» लंगरे रसाइल की निय्यतें	35	«64» इस्लामी बहनों के लिये मेहंदी लगाने की निय्यतें	39
«58» म-दनी मश्वरा करने और देने की निय्यतें	36	«65» पर्दे की निय्यतें	40
«59» म-दनी कामों की कारकर्दगी जम्अ़ करवाने में निय्यतें	36	«66» सुरमा लगाने की निय्यतें	40
		«67» सोने की निय्यतें	40
«60» दा'वते इस्लामी के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की निय्यतें	37	«68» इलाज करवाने की निय्यतें	41
		«69» मरीज़ की इ़यादत की निय्यतें	42
«61» नाख़ुन काटने की निय्यतें	38	«70» ता'ज़ियत की निय्यतें	42
«62» ज़ुल्फ़ें रखने की निय्यतें	38	«71» जनाज़े में शिर्कत की निय्यतें	43
«63» सर और दाढ़ी के बालों में मेहंदी लगाने की निय्यतें	39	«72» क़ब्रिस्तान जाने की निय्यतें	43

घर वालों पर ख़र्च कीजिये मगर ठहरिये......

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم **:** जब आदमी अपने घर वालों पर सवाब की निय्यत से ख़र्च करे तो वोह उस के लिये स-दक़ा है। (بخاری، حدیث: 55)

शर्हे ह़दीस : इस ह़दीस का ह़ासिल येह है कि कोई मुबाह़ (या'नी जाइज़) काम भी ब निय्यते ख़ैर (या'नी अच्छी निय्यत से) किया जाए तो उस पर भी सवाब है, अहलो इयाल की परवरिश इन्सान करता ही है लेकिन अगर इन की परवरिश रिज़ाए इलाही के लिये हो तो इस पर भी सवाब है। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 1, स. 399)

घर वालों पर ख़र्च करने की निय्यतें

❁ रिज़ाए इलाही के लिये हुक्मे शरीअ़त पर अ़मल करने के लिये ख़र्च करूंगा ❁ जो समझदार हैं इस से उन का दिल खुश करूंगा ❁ सिलए रेह़मी (या'नी रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक) करूंगा।

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, ग्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net